हमारी बात

'सबला' एक कड़ी है जो हमें आप से जोड़ती है। इसके ज़रिए हम अपनी बात आप तक पहुंचाने की कोशिश करती हैं। जब बहनों के पत्र हमें मिलते हैं तो लगता है कि हमारी बात आप तक पहुंची। 'सबला' ने आपको हमसे जोड़ा।

राष्ट्रीय स्तर पर औरतों को एक दूसरे से जोड़ने और संगठित करने के लिए 28 से 31 दिसंबर 1990 को कालीकट (केरल, दक्षिण भारत) में एक अखिल भारतीय महिला सम्मेलन होगा। सम्मेलन में देश के कोने-कोने से आई हज़ारों बहनें साथ मिल कर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करेंगी। बहनें अपने सुख-दुख बांटेंगी, दूसरों के अनुभवों से सीखेंगी, नई जानकारी हासिल करेंगी। ऐसे तीन सम्मेलन पहले हो चुके हैं, दो बंबई में और एक पटना में। यह चौथा सम्मेलन होगा।

साथ मिल-बैठ कर चर्चा करना, एक की बात दूसरे तक पहुंचाने का बढ़िया साधन है। ऐसी चर्चाएं बड़े स्तर पर तो कभी-कभार ही आयोजित हो पाती हैं, लेकिन छोटे स्तरों पर अक्सर होती हैं। यदि आप गांव स्तर पर काम करती हैं तो 15-20 दिन में एक बार ज़रूर आयोजित कर सकती हैं। चर्चा का मुख्य मुद्दा पहले से तय कर सब बहनों को बता दें जिससे वे उस बारे से सोच कर आएं। चर्चा के दौरान मुख्य मुद्दे से हट कर कई अन्य सवाल उठेंगे। उन पर भी बातचीत करें।

देश के अलग-अलग हिस्सों में कई महिला समूह सक्रिय हैं। उनके अनुभवों से बहनें और अन्य समूह सीख सकते हैं। इन अनुभवों को दूसरों तक पहुंचाने के कई तरीके हैं। 'सबला' जैसी पत्रिकाएं यह काम बखूबी करती हैं। वीडियो फिल्मों और टेप-रिकार्डरों के ज़रिए भी इन अनुभवों को दूर-दूर पहुंचाया जाता है। अब तो अनपढ़ औरतें भी वीडियो फिल्में बना कर अपनी समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से उजागर करती हैं (पढ़िए लेख 31 पृष्ठ पर)।

'सबला' के इस अंक में हमने उन सब माध्यमों की चर्चा की है जिनके ज़रिए जानकारी का संचार होता है। पारंपरिक तरीकों, जैसे कठपुतली के खेल, लोकगीत, मेले, नाटक व नौटंकी से लेकर नये तरीकों जैसे फ्लैश कार्ड, सुनने के कैसेट और वीडियो फिल्में आदि सभी के बारे में बताया है।

नई जानकारी के संचार के लिए बच्चे भी अच्छा माध्यम हैं। किसी भी परिवार तक पहुंचने के लिए बच्चे बहुत कारगर साबित हुए हैं। बच्चों की कही बात का मां-बाप पर काफी असर पड़ता है।

सामाजिक जागरुकता और बदलाव लाने के लिए ज़रूरी है कि नये विचारों का लेन-देन और फैलाव हो। अक्सर बहुत से प्रेरणात्मक कामों व अनुभवों की जानकारी आम लोगों तक नहीं पहुंचती। जब किसी सुदूर गांव के लोग जान जाते हैं कि अन्य समूह बदलाव के काम में जी-जान से जुटे हैं तो उन्हें प्रेरणा मिलती है, उनमें हिम्मत आती है।

हमारा बहनों से अनुरोध है कि उन्हें जो भी नई जानकारी मिले उसे अन्य बहनों तक ज़रूर पहुंचाएं।

संपादिका